नईदुनिया

संपादकीय

वंदे मातरम के मंच पर राजनीति या राष्ट्रभक्ति

राष्ट्रीय राजनीति का तापमान फिर से बढ़ गया, जब कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और वरिष्ठ नेता सोनिया गांधी की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रम में वंदे मातरम गायन के दौरान घटनाक्रम ने नया मोड़ ले लिया। मंच पर राष्ट्रगीत के सम्मान को लेकर जो कुछ हुआ, उसने कुछ ही घंटों में देशभर में बहस छेड़ दी। विपक्ष इसे सामान्य चूक बता रहा है, तो सत्ता पक्ष इसे राष्ट्रभक्ति के अपमान के रूप में देख रहा है।

भाजपा नेताओं ने कहा कि जिस मंच पर विपक्षी दल के तीनों शीर्ष नेता मौजूद थे, वहां वंदे मातरम के समय अनुशासन और सम्मान की अपेक्षा थी। उनका कहना था कि एक तरफ संविधान और राष्ट्र की बात और दूसरी तरफ राष्ट्रभक्ति के प्रतीकों के प्रति उदासीनता, यह जनता के सामने जाना चाहिए। कांग्रेस ने सफाई देते हुए कहा कि यह जानबूझकर किया गया कृत्य नहीं था। खड़गे और राहुल गांधी ने स्पष्ट किया कि उनके लिए वंदे मातरम और तिरंगा सर्वोपरि हैं। लेकिन राजनीति में प्रतीक बहुत बड़ी ताकत रखते हैं। वंदे मातरम केवल एक गीत नहीं है, यह स्वतंत्रता संग्राम की चेतना और लाखों शहीदों की कुर्बानी की याद है। इसलिए जब भी इस गीत या राष्ट्रध्वज से जुड़ा कोई प्रसंग होता है, जनता की भावनाएं तुरंत जुड़ जाती हैं।

भाजपा और अन्य दलों ने इस अवसर को हाथ से नहीं जाने दिया। उनका तर्क है कि अगर राजनीतिक दल ही राष्ट्रभक्ति के प्रतीकों का सम्मान नहीं करेंगे तो आम जनता से क्या उम्मीद की जा सकती है। कांग्रेस का कहना है कि भाजपा इस छोटे से मुद्दे को बड़ा बनाकर जनता का ध्यान महंगाई, बेरोजगारी और अन्य ज्वलंत समस्याओं से भटकाना चाहती है। कांग्रेस के लिए यह मुश्किल स्थिति है, क्योंकि पार्टी खुद को संविधान और लोकतंत्र का रक्षक बताती रही है। अब जब उस पर ही राष्ट्रभक्ति के मामले में सवाल उठे हैं, तो जवाब देना जरूरी है। ऐसे में प्रतीकात्मक घटनाएं दोनों पक्षों के लिए राजनीतिक हथियार बन जाती हैं।

जनता के लिए वंदे मातरम सम्मान का विषय है, लेकिन वह यह भी देखती है कि नेता समस्याओं का समाधान कर रहे हैं या केवल एक-दूसरे पर आरोप लगा रहे हैं। अगर बहस मुद्दों से हटकर केवल नारों और प्रतीकों तक सीमित रह गई तो इसका फायदा किसी को नहीं होगा। इस घटना से सभी राजनीतिक दलों को सबक लेना चाहिए। राष्ट्रगीत के समय छोटी चूक भी बड़ी राजनीति का विषय बन सकती है। राष्ट्रभक्ति को किसी एक दल की जागीर नहीं बनाया जाना चाहिए। हर भारतीय को अपने देश से प्रेम करने का अधिकार है और हर दल को इस भावना का सम्मान करना चाहिए। वंदे मातरम का सम्मान हर भारतीय का कर्तव्य है, लेकिन उस सम्मान को चुनावी हथियार बनाना लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है। नेताओं को चाहिए कि वे मतभेदों के बावजूद देश को सर्वोपरि रखें।

आजकल

ट्रंप की होर्मुज टिप्पणी से खाड़ी में बढ़ी तनातनी - युद्ध या सीजफायर

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की एक घोषणा ने पूरी दुनिया को हिला कर रख दिया है। उन्होंने कहा कि अमेरिका होर्मुज जलडमरूमध्य पर अपना नियंत्रण स्थापित करेगा और जरूरत पड़ी तो उसे अमेरिका का हिस्सा भी बनाया जाएगा। ट्रंप का यह बयान आते ही पश्चिम एशिया में कोहराम मच गया। ईरान ने इसे युद्ध की घोषणा करार दिया है। सवाल अब यही है कि यह बयान तनाव को और बढ़ाएगा या किसी बड़े समझौते और सीजफायर की तरफ ले जाएगा।

होर्मुज जलडमरूमध्य दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों में से एक है। दुनिया का लगभग 20 प्रतिशत तेल और 30 प्रतिशत तरल प्राकृतिक गैस इसी रास्ते से गुजरती है। ऐसे में इस जलडमरूमध्य पर किसी एक देश का नियंत्रण पूरी वैश्विक अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकता है। यही वजह है कि ट्रंप का बयान राजनीतिक के साथ आर्थिक और सैन्य दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

ईरान का जवाब तुरंत आया। तेहरान ने कहा कि होर्मुज ईरान की संप्रभुता का हिस्सा है और अगर अमेरिका ने कोई दुस्साहस किया तो उसका अंजाम बहुत बुरा होगा। विशेषज्ञ मानते हैं कि ईरान के लिए यह अस्तित्व का सवाल है, क्योंकि उसकी अर्थव्यवस्था काफी हद तक तेल निर्यात पर निर्भर है।

अब सबसे बड़ा सवाल है कि आगे क्या होगा - युद्ध या सीजफायर? पहला रास्ता टकराव का है। अमेरिका ने सैन्य उपस्थिति बढ़ाई और ईरान ने जवाबी कार्रवाई की तो खाड़ी में बड़ा युद्ध छिड़ सकता है। इससे तेल की कीमतें बढ़ेंगी और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर गंभीर असर पड़ेगा।

दूसरा रास्ता कूटनीति का है। यूरोपीय संघ, चीन और रूस मध्यस्थता की कोशिश कर सकते हैं। तीसरा रास्ता लंबी तनातनी का है, जिसमें न खुला युद्ध होगा और न पूरी शांति। यही स्थिति सबसे खतरनाक होगी, क्योंकि छोटी-सी गलती भी बड़े युद्ध में बदल सकती है।

लापता महिलाओं और बच्चों का आंकड़ा डरा रहा

मध्यप्रदेश में 2020 से जनवरी 2026 तक दो लाख 74 हजार 311 महिलाएं और लड़कियां लापता हुईं। यह आंकड़ा सिर्फ संख्या नहीं है, यह प्रदेश की सामाजिक सुरक्षा और प्रशासनिक व्यवस्था पर सबसे बड़ा सवाल है। मध्यप्रदेश हाईकोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने जब यह आंकड़ा सार्वजनिक किया तो पूरा प्रदेश हिल गया। कोर्ट ने कहा कि सरकार के पास लापता महिलाओं और बच्चों का कोई अपडेटेड सार्वजनिक रिकॉर्ड ही नहीं है। आठ साल से सामाजिक कार्यकर्ता अभिजीत पांडे की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए कोर्ट ने राज्य सरकार से जवाब मांगा है और कहा है कि यह स्थिति बेहद गंभीर है।

कोर्ट के सामने रखे गए आंकड़ों के अनुसार जनवरी 2020 से 28 जनवरी 2026 तक प्रदेश में दो लाख 74 हजार 311 महिलाएं और लड़कियां लापता हुई हैं। इनमें से कितनी मिलीं, कितनी जिंदा हैं और कितनों का अभी तक पता नहीं चला, इस बारे में सरकार के पास कोई स्पष्ट जानकारी नहीं है। आरटीआई के जरिए मांगी गई जानकारी में भी पुलिस और प्रशासन ने गोलमोल जवाब दिया है। इंदौर जिले में ही जनवरी 2021 से जून 2026 तक लापता महिलाओं और बच्चों की संख्या 1300 से ज्यादा बताई गई है। इसका मतलब है कि हर दिन औसतन एक से ज्यादा महिला या बच्चा प्रदेश में गायब हो रहा है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि लापता होने के बाद तलाश की प्रक्रिया बेहद धीमी और असंगठित है। सामाजिक कार्यकर्ता अभिजीत पांडे ने कोर्ट को बताया कि कई थानों में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज ही नहीं की जाती और अगर होती भी है तो एफआईआर दर्ज करने में हफ्तों लग जाते हैं। पुलिस के पास लापता लोगों को ट्रेस करने के लिए न तो तकनीक है और न ही पर्याप्त मानव संसाधन। सीसीटीवी फुटेज, बैंक ट्रांजेक्शन और मोबाइल लोकेशन जैसी जरूरी जांचें समय पर नहीं हो पातीं। नतीजा यह है कि फाइलें धूल खाती रहती हैं और परिवार दर-दर भटकते रहते हैं। लापता होने वालों में सबसे ज्यादा संख्या 18 से 35 साल की महिलाओं की है। इसके बाद नाबालिग लड़कियों और बच्चों का नंबर आता है। विशेषज्ञ मानते हैं कि इसके पीछे कई कारण हैं।

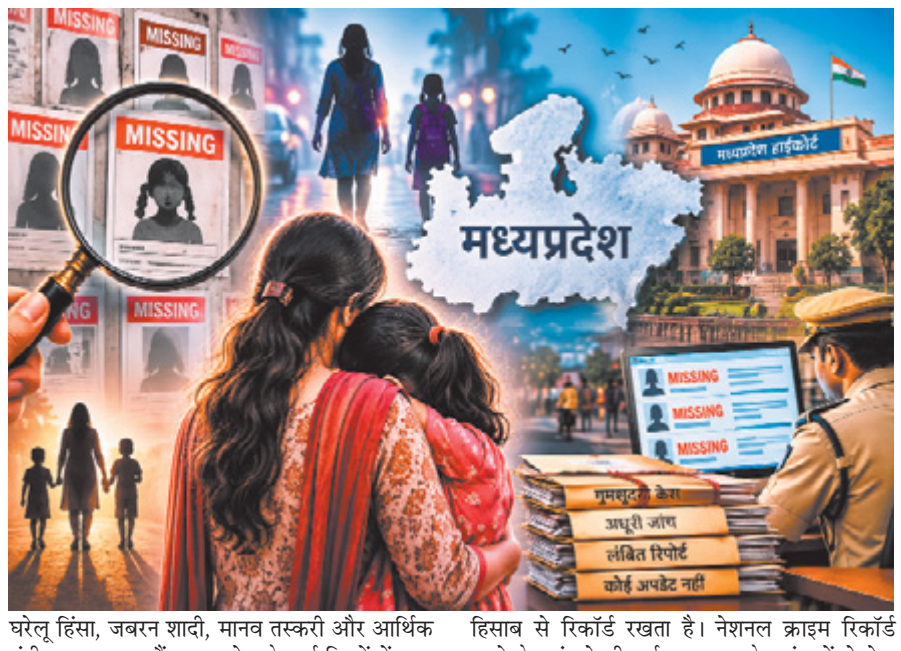

घरेलू हिंसा, जबरन शादी, मानव तस्करी और आर्थिक तंगी प्रमुख कारण हैं। मध्यप्रदेश के कई जिलों में बाल विवाह और पलायन की समस्या पहले से है। ऐसे में लड़कियों का अचानक गायब हो जाना आम बात हो गई है। शहरी इलाकों में नौकरी और पढ़ाई के नाम पर आने वाली लड़कियां भी दलालों के जाल में फंस जाती हैं और फिर उनका कोई अता-पता नहीं चलता।

सरकार का तर्क है कि हर लापता मामले में पुलिस जांच कर रही है, लेकिन जमीनी हकीकत अलग है। पीड़ित परिवारों का कहना है कि पुलिस पहले ही दिन से गंभीरता नहीं दिखाती। कई बार कहा जाता है कि लड़की खुद घर से गई होगी, 24 घंटे इंतजार करो या फिर आपसी मामला है। इस रवैये के कारण कीमती समय हाथ से निकल जाता है और बाद में तलाश मुश्किल हो जाती है। कोर्ट ने भी इसी लापरवाही पर नाराजगी जताई है और कहा है कि हर गुमशुदगी को गंभीरता से लिया जाना चाहिए। इस समस्या का एक बड़ा कारण डेटा का अभाव है। प्रदेश में लापता महिलाओं और बच्चों का कोई एकीकृत पोर्टल नहीं है। हर जिला और थाना अपने हिसाब से रिकॉर्ड रखता है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े भी कई बार राज्य के आंकड़ों से मेल नहीं खाते। ऐसे में यह पता लगाना मुश्किल है कि वास्तव में कितने लोग लापता हैं और कितने बरामद हुए हैं। हाईकोर्ट ने सरकार को निर्देश दिया है कि वह एक सेंट्रलाइज्ड डेटाबेस बनाए और हर महीने उसकी जानकारी सार्वजनिक करे।

लापता महिलाओं और बच्चों का मुद्दा केवल कानून-व्यवस्था का नहीं है। यह सामाजिक और आर्थिक मुद्दा भी है। जब घर की बेटी या मां गायब होती है तो पूरा परिवार टूट जाता है, आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है और समाज में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर डर बढ़ जाता है। कई परिवार तो पुलिस थाने के चक्कर काटते-काटते कर्ज में डूब जाते हैं और फिर भी उन्हें न्याय नहीं मिलता। यह स्थिति प्रदेश की छवि के लिए भी अच्छी नहीं है।

इस समस्या से निपटने के लिए तीन स्तर पर काम करना होगा। पहला स्तर है रोकथाम। स्कूल, कॉलेज और पंचायत स्तर पर महिलाओं और लड़कियों को आत्मरक्षा और साइबर सुरक्षा की ट्रेनिंग देनी होगी। दूसरा स्तर है त्वरित कार्रवाई। हर थाने में महिला डेस्क को मजबूत करना और गुमशुदगी की रिपोर्ट तुरंत दर्ज करना अनिवार्य करना होगा। तीसरा स्तर है पुनर्वास। जो महिलाएं और बच्चे मिलते हैं, उनके लिए काउंसलिंग और रोजगार की व्यवस्था करना होगा, ताकि वे दोबारा शोषण का शिकार न हों।

तकनीक इस लड़ाई में बड़ी भूमिका निभा सकती है। चेहरा पहचान तकनीक, सोशल मीडिया ट्रैकिंग और मोबाइल लोकेशन के जरिए कई मामलों को जल्दी सुलझाया जा सकता है, लेकिन इसके लिए पुलिस को प्रशिक्षण और संसाधन देने होंगे। साथ ही पड़ोसी राज्यों और एनजीओ के साथ समन्वय बनाना होगा, क्योंकि तस्करी के अधिकांश मामले अंतरराज्यीय होते हैं।

हाईकोर्ट की टिप्पणी के बाद अब सरकार पर दबाव बढ़ गया है। माना जा रहा है कि आने वाले सत्र में सरकार इस मुद्दे पर विशेष अभियान चलाएगी और लापता लोगों की तलाश के लिए टास्क फोर्स बनाएगी। लेकिन सवाल यह है कि क्या यह केवल कागजी कार्रवाई बनकर रह जाएगा या जमीनी स्तर पर बदलाव आएगा। पिछले कई सालों से ऐसे निर्देश आते रहे हैं, लेकिन अमल कम हुआ है।

समाज की भूमिका भी यहां महत्वपूर्ण है। अक्सर परिवार वाले सामाजिक बदनामी के डर से पुलिस में शिकायत नहीं करते या देर से करते हैं। उन्हें यह समझना होगा कि समय पर रिपोर्ट दर्ज कराने से ही जान बच सकती है। मीडिया और सामाजिक संगठनों को भी इस मुद्दे को लगातार उठाते रहना होगा, ताकि प्रशासन पर दबाव बना रहे। दो लाख 74 हजार का आंकड़ा मध्यप्रदेश के लिए चेतावनी है। अगर अभी भी ठोस कदम नहीं उठाए गए तो आने वाले सालों में यह संख्या और बढ़ेगी। महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा किसी भी सभ्य समाज की पहली पहचान होती है। मध्यप्रदेश को अब यह साबित करना होगा कि वह अपनी बेटियों की रक्षा करने में सक्षम है। हाईकोर्ट ने दरवाजा खोल दिया है, अब सरकार को उसमें से होकर गुजरना होगा और हर लापता को घर वापस लाने का संकल्प लेना होगा। तभी जाकर इस डरावने आंकड़े पर लगाम लग सकेगी।

(नईदुनिया संपादकीय डेस्क)

हर मोर्चे पर असफल होते अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप

डॉ. विश्वास तिवारी

दुनिया के सबसे ताकतवर राष्ट्रपति अमेरिका के डोनाल्ड ट्रंप अपनी हरकतों से पूरी दुनिया में अपनी छवि खराब कर रहे है। डोनाल्ड ट्रंप ने अपने दूसरे कार्यकाल में सबसे पहले यह घोषणा की थी कि वह रूस और यूक्रेन का युद्ध रूकवा देगें, लेकिन साढ़े चार साल से ज्यादा समय से युद्ध अभी तक चल रहा है। युद्ध रूकवा कर शांति का नोबल की आस रखने वाले डोनाल्ड ट्रंप ने अभी तक एक भी युद्ध नहीं रूकवाया है और जबरदस्ती युद्धों को रूकवाने का श्रेय लेने की कोशिश की है। उनकी छवि सबसे ज्यादा खराब इसलिए हुई है क्योंकि वह बार-बार अपने बयान बदलते रहते है। कभी वह भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को अपना सबसे अच्छा मित्र कहते है, तो कभी ईरान- अमेरिका युद्ध में पाकिस्तान जैसे आतंकवादी को पनाह देने वाले देश को ईरान से अपना युद्ध रूकवाने के लिए मध्यसत्ता करने के लिए कहते है। अमेरिका ने पाकिस्तान से तेल भंडारों और पाकिस्तान के बलूचिस्तान के खनिज भंडारों पर सौदा किया है। जब अमेरिका का सौदा हो गया तो ट्रंप ने पाकिस्तान को दूध में से मक्खी की तरह निकालकर बाहर कर दिया। भारत की अपना मित्र देश बताने के बावजूद अब तक भारत से कोई भी ट्रेड डील पर सहमति नहीं बनाई है। वह बार-आर भारत की टैरिफ की दर बदलते रहते है। अब तो उन्होंने रूस से तेल खरीदने वाले पांच देशों पर सौ प्रतिशत टैरिफ लगाने का फरमान जारी किया है जिसमें भारत और चीन भी शामिल है। यह प्रस्ताव सिनेट में मंजूर हो गया है और 30 अगस्त तक मंजूर हो सकता है। अमेरिका बार-बार यह घोषणा करता है कि उसकी सेना ईरान पर हमला करने के लिए पूरी तरह तैयार है और यह ईरान के लिए आखरी चेतावनी है। उसके अगले ही दिन ट्रंप का यह बयान आता है कि ईरान सहित कई खाड़ी देशों ने यह हमला रोकने के लिए आग्रह किया है, क्योंकि समझौते की रूपरेखा बन चुकी है। उनके इस

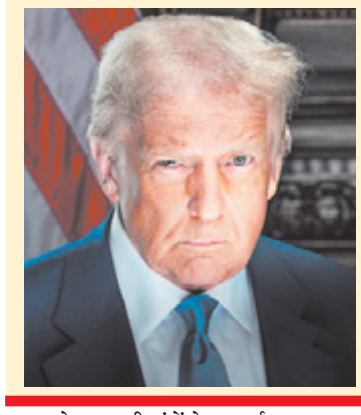

डोनाल्ड ट्रंप को युद्ध में कूदने की ऐसी सनक चढ़ी है कि वह दूसरों के मामलों में उलझते रहते है। इजराइल के उकसावे में आकर उन्होंने यह बेमतलब की जंग शुरू की और अब उनकी ऐसी हालत हो गई है कि वह अपने को विजेता भी बताना चाह रहे है और इस युद्ध से भी बाहर निकलना चाह रहे है। उनकी यह स्थिति हो गई है कि अब वह अपने देशवासियों से ही युद्ध लड़ रहे है। नवंबर में अमेरिका में मिड टर्म चुनाव है, कहीं यह युद्ध उन पर ही भारी न पड़ जाएं।

बयान के कुछ ही घंटों के बाद ईरान इस समझौते की बात से मुकर जाता है कि वह होमुर्ज जलमार्ग खोलने के तैयार है। असल में अमेरिकी राष्ट्रपति के मनमाने फैसलों की कीमत वो देश उठा रहे है जिसका इस जंग से कोई लेना-देना नहीं है। इस युद्ध का असर एशिया, अफ्रीका, यूरोप पर पड़ रहा है। सबसे ज्यादा असर उन खाड़ी देशों पर पड़ रहा है जो इस जलमार्ग के किनारों पर स्थित है। अब तक होमुर्ज जलमार्ग खोलने के सभी प्रयास विफल हो रहे है। ईरान अमेरिका तक तो हमला नहीं कर सकता इसलिए वह अमेरिका के खाड़ी देशों में सहयोगी देश जैसे इजराइल, कतर, कुवैत, बहरीन, जार्डन और सऊदी अरब पर बमबारी कर रहा है। वहां हमला अमेरिकी सैन्य ठीकानों और तेल की भंडारण व्यवस्था पर हो रहा है। इसके अलावा वह इन देशों के ऊर्जा प्रतिष्ठान और खारे जल के शोधन संयत्रों पर भी ड्रोन से बमबारी कर रहा है। अब यह युद्ध क्षेत्रीय नहीं रह गया है। पहले होमुर्ज जलमार्ग से प्रतिदिन लगभग 90 जहाज गुजरते थे। जुलाई में इनकी संख्या घटकर केवल 10 जहाज प्रतिदिन रह गई है।

डोनाल्ड ट्रंप को युद्ध में कूदने की ऐसी सनक चढ़ी है कि वह दूसरों के मामलों में उलझते रहते है। इजराइल के उकसावे में आकर उन्होंने यह बेमतलब की जंग शुरू की और अब उनकी ऐसी हालत हो गई है कि वह अपने को विजेता भी बताना चाह रहे है और इस युद्ध से भी बाहर निकलना चाह रहे है। उनकी यह स्थिति हो गई है कि अब वह अपने देशवासियों से ही युद्ध लड़ रहे है। नवंबर में अमेरिका में मिड टर्म चुनाव है, कहीं यह युद्ध उन पर ही भारी न पड़ जाएं। अमेरिका को यह युद्ध शुरू करने से पहले अपना इतिहास देखना था।

पहले करोड़ों डॉलर खर्च करने के बाद उन्हें अफगानिस्तान से खाली हाथ लौटना पड़ा था। उसे तो ओसामा बिन लादेन को मारने में सालों लग गए और ईरान तो पूरा देश है। वहां की भौगोलिक स्थिति ऐसी है कि वहां जमीन पर सैनिक नहीं उतारे जा सकते है। अपनी छवि को चमकाने के लिए वह बचकानी हरकतें करते रहते है। हाल ही में उन्होंने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ट्रूथ पर एक एआई से बनाई गई तस्वीर शेयर की है जिसमें वह ग्रीक के पौराणिक पात्र 'एटलस' बन कर जिसमें वो पूरी धरती का बोझ अपने कंधे पर उठाए नजर आ रहे है । इसके पहले भी वह यीशू के अवतार में, तो कभी वह पोप के अवतार में अपनी तस्वीर सोशल मीडिया पर डाल चुके है। वह धरती का बोझ उठा नहीं रहे है, असल में तो वह खुद धरती पर बोझ बन रहे है। विश्व भर के दूसरे देश चाहते है कि वह मिड टर्म चुनाव हार जाएं, ताकि भले ही वो राष्ट्रपति के पद पर रहे, लेकिन उनकी राजनैतिक शक्तियां कम हो जाए और वह मनमानी नहीं कर सके। इस तरह की तस्वीरों से वह अपनी छवि चमका नहीं रहे है, बल्कि हंसी का पात्र बन रहे है। चाहे व्यापार हो, गठबंधन हो, महाशक्तियों से संवाद हो या युद्ध विराम हो, हर मोर्चे पर अमेरिका ने घोषणा तो की, लेकिन उसकी कोई भी घोषणा हकीकत में नहीं बदल पाई।

ट्रंप ने ऐसे युद्ध में खुद को उलझा लिया है जिसमें अमेरिका की कमजोरियां दुनिया में सामने आने लगी है। उसके हथियार तेजी से कम हो रहे है। हालांकि वह सार्वजनिक रूप में अपनी सेना की मजबूती का दावा करते रहते है, लेकिन उनके खुद के अधिकारी और सलाहकार वर्तमान स्थिति के खतरे को उजागर करते रहते है। उन्होंने ईरान की ताकत का अंदाज लगाए बिना उस पर आक्रमण कर दिया। ईरान इस युद्ध को जितना लंबा खींचेगा उतना ही अमेरिका का नुकसान होगा। अमेरिका रेयर अर्थ खनिजों पर चीन पर निर्भर था। जब अमेरिका ने चीन पर ज्यादा टैरिफ लगाया तो उसने अमेरिका के रेयर अर्थ सामग्रियों पर रोक लगा दी, जिससे उसके रक्षा उत्पादन पर बड़ा असर पड़ा। इससे रेयर अर्थमटेरियल की कीमतें अंतरराष्ट्रीय बाजार में काफी ज्यादा बढ़ गई। अब इस युद्ध को रोकने के लिए अमेरिका चाहे कोई भी प्रयास कर लें, ईरान अब होमुर्ज जलमार्ग के कब्जे को अपने पास रखने पर अड़ गया है और वह वहां से गुजरने वाले हर जहाज से टोल भी लेगा। अमेरिका ईरान को परमाणु शक्ति बनने से रोकने चले थे और होमुर्ज जलमार्ग बंद करा बैठे जिससे पूरी दुनिया आर्थिक संकट में फंस गई। वो एक कहावत है कि चौबे गए थे छब्बे बनने, दुबे बनकर लौटै, यह कहावत डोनाल्ड ट्रंप पर पूरी तरह से लागू होती है।

84 महादेव दर्शन यात्रा

43/84 -अंगारेश्वर महादेव, उज्जैन

भूमिपुत्र से मंगलदेव तक : उज्जयिनी के अंगारेश्वर महादेव की वह कथा, जो सिखाती है विनाश से कल्याण तक का सफर

खगर्ता-क्षिप्रा संगम का दिव्य रहस्य : यहीं शिव ने अपने क्रोधी पुत्र को दिया नया जीवन, नया नाम - अंगारक

डॉ. नवीन आनंद जोशी

उज्जैन की पावन धरती केवल महाकाल की नगरी नहीं, बल्कि ऐसी आध्यात्मिक परंपराओं की भूमि है, जहाँ देवकथाओं के भीतर जीवन को सही दिशा देने वाले गहरे संदेश छिपे हैं। महाकाल वन में स्थित मंगलनाथ मंदिर भी ऐसी ही दिव्य परंपरा का केंद्र है। मंगलनाथ से जुड़ी अंगारक की कथा केवल मंगल ग्रह की उपासना की कथा नहीं है, बल्कि यह मनुष्य के 'क्रोध को शक्ति, शक्ति को पराक्रम और पराक्रम को लोककल्याण में बदलने' का संदेश देती है।

कथा के अनुसार, पहले कल्प में लाल शरीर की शोभा वाले, टेढ़े शरीर और क्रोध से युक्त एक बालक भगवान शिव के शरीर से उत्पन्न हुआ। भगवान शिव ने उस बालक को पृथ्वी पर रख दिया। उसका नाम भूमिपुत्र हुआ। जन्म से ही उसका शरीर भयावह था। जब वह पृथ्वी पर चलने लगा तो धरती कांपने लगी और समुद्रों में तूफान आने लगे। उसके प्रभाव से देवताओं और मनुष्यों में चिंता उत्पन्न हो गई।सभी देवता देवगुरु बृहस्पति के पास गए। उन्होंने बताया कि यह बालक भगवान शंकर के शरीर से उत्पन्न हुआ है और जन्म लेते ही उत्पात मचा रहा है। देवगुरु बृहस्पति देवताओं को लेकर कैलाश पर्वत पहुंचे और भगवान शिव को पूरी बात बताई।भगवान शिव ने बालक को अपने पास बुलाया। बालक आया और भगवान से पूछा- 'हे प्रभु! मेरे लिए क्या आज्ञा है? मैं क्या करूं?

तब भगवान शिव ने कहा- 'बालक, तुम्हारा नाम अंगारक है। तुम्हें पृथ्वी पर लोगों के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए, विनाश के लिए नहीं। यह सुनकर बालक उदास हो गया। तब भगवान शिव ने उसे अपनी गोद में बैठाकर समझाया- 'हे पुत्र, मैं तुम्हें उज्जैन नगरी में उत्तम स्थान देता हूं। महाकाल वन में खगर्ता और शिप्रा का संगम है। जब मैंने गंगा को अपने मस्तक पर धारण किया था, उस समय वह क्रोध से चंद्र मंडल से नीचे गिरी थी। आकाश से नीचे आने पर उसका नाम खगर्ता हुआ। इसलिए मैंने वहां अवतार लिया है। मैं तुम्हें तीसरा स्थान देता हूं। तुम वहां जाकर रहो। वहां से तीनों लोकों में तुम्हें जाना जाएगा और तुम्हारी तृप्ति भी होगी। लोग तुम्हारी प्रसन्नता के लिए चतुर्थी का व्रत करेंगे, पूजन करेंगे और दक्षिणा देंगे। इससे तुम्हें भोजन की तृप्ति होगी।'

भगवान शिव की आज्ञा पाकर वह बालक उज्जैन की पावन भूमि पर आया। तभी से मंगलनाथ की यह परंपरा आस्था का केंद्र मानी जाती है। मान्यता है कि मंगलनाथ के दर्शन और पूजा से भक्तों को मंगल की प्राप्ति होती है।लेकिन इस कथा को यदि वैदिक ज्योतिष की दृष्टि से समझें, तो मंगल का स्वरूप और भी व्यापक दिखाई देता है। वैदिक कुंडली में मंगल को 'पराक्रम, साहस, शौर्य, ऊर्जा, भूमि, संघर्ष करने की क्षमता और भाई-बंधुओं', विशेषकर छोटे भाई के प्रमुख कारकों में माना जाता है। मंगल मित्रता में भी उस शक्ति का प्रतीक है जिसमें व्यक्ति अपने प्रियजनों के लिए खड़ा होता है, संकट में साथ देता है और आवश्यकता पड़ने पर रक्षा करता है। इसलिए मंगल केवल युद्ध या क्रोध का ग्रह नहीं है; वह 'साहस और संरक्षण की शक्ति' भी है।यहीं से 'भाई में मंगल' का एक सुंदर अर्थ सामने आता है। भाई-भाई के बीच प्रेम, सहयोग और एक-दूसरे के लिए खड़े होने की भावना हो तो मंगल की शक्ति शुभ दिशा में दिखाई देती है। घर में भाई एक-दूसरे के प्रतिद्वंद्वी न होकर एक-दूसरे की ताकत बनें, तो पराक्रम परिवार की उन्नति का कारण बनता है। भगवान गणेश और भगवान कार्तिकेय की ओर देखें तो सनातन परंपरा हमें इसी भाव की प्रेरणा देती है। दोनों भाइयों के गुण अलग हैं। गणेश जी बुद्धि, विवेक और सूझबूझ के प्रतीक हैं, जबकि कार्तिकेय जी शौर्य, पराक्रम और सेनानायकत्व के। फिर भी दोनों के बीच प्रेम

और पारिवारिक आत्मीयता है। यह हमें सिखाता है कि भिन्न गुण होना विरोध का कारण नहीं होना चाहिए। बुद्धि और पराक्रम साथ हों तो जीवन अधिक सुंदर बनता है। मंगल का एक पक्ष क्रोध भी है। अंगारक बालक के जन्म के साथ ही उसकी उग्रता सामने आई और उसके प्रभाव से धरती तथा समुद्रों में हलचल उत्पन्न हुई। यह दृश्य आज के मनुष्य के लिए बहुत बड़ा संदेश है। हमारे भीतर भी ऊर्जा होती है। वही ऊर्जा कभी साहस बनती है, कभी परिश्रम, कभी संघर्ष करने की क्षमता और कभी क्रोध। अंतर केवल इतना है कि हम उस ऊर्जा को किस दिशा में ले जाते हैं।

आज की पीढ़ी के सामने यह प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है। छोटी-सी बात पर गुस्सा आ जाना, तुरंत जवाब देना, सोशल मीडिया पर बिना सोचे प्रतिक्रिया करना, असहमति को अपमान समझ लेना और बात-बात पर संबंधों में कटुता पैदा कर लेना—क्या यह हमारी ऊर्जा का सही उपयोग है? भगवान शिव ने अंगारक को उसकी शक्ति छोड़ने के लिए नहीं कहा था। उन्होंने उसे 'दिशा बदलने' के लिए कहा था। यही इस कथा का सबसे बड़ा दर्शन है।

मंगल की शक्ति को नष्ट नहीं करना है, उसे संस्कारित करना है। इसके लिए जीवनशैली भी महत्वपूर्ण है। भारतीय परंपरा में भोजन को केवल पेट भरने का साधन नहीं माना गया, बल्कि मन और व्यवहार पर प्रभाव डालने वाला तत्व भी माना गया है। सात्त्विक भोजन, संयमित भोजन और शुद्ध आहार को मन की शांति से जोड़ा गया है। जब भोजन में संयम आता है, दिनचर्या में अनुशासन आता है और मन को उत्तेजना से बचाया जाता है, तो क्रोध पर नियंत्रण करना भी आसान होता है। यहाँ भोजन को मंगल का सीधा ज्योतिषीय कारक मानने के बजाय यह समझना अधिक उचित है कि शरीर को मिलने वाला आहार हमारी ऊर्जा और मन:स्थिति को प्रभावित करता है, और उसी ऊर्जा का सही उपयोग मंगल के सकारात्मक स्वरूप की याद दिलाता है।मंगल की शक्ति का श्रेष्ठ रूप वह है जो किसी को दबाए नहीं, बल्कि किसी निर्बल को सहारा दे; जो लड़ाई खोजे नहीं, लेकिन अन्याय के सामने खड़ा होने का साहस रखे; जो क्रोध में संबंध न तोड़े, बल्कि संयम से समस्या का समाधान करे।इसलिए मंगलनाथ की कथा हमें केवल ग्रह की शांति का संदेश नहीं देती। वह हमें अपने भीतर के अंगारक को पहचानने की प्रेरणा देती है। हमारे भीतर भी क्रोध है, ऊर्जा है, महत्वाकांक्षा है, साहस है और संघर्ष करने की क्षमता है। प्रश्न यह नहीं कि हमारे भीतर अग्नि है या नहीं- प्रश्न यह है कि उस अग्नि से हम घर जलाते हैं या दीपक जलाते हैं।

भाई में प्रेम हो तो मंगल शुभ बनता है। मित्र के संकट में साथ खड़े हों तो मंगल का पराक्रम दिखाई देता है। साहस को सेवा से जोड़ें तो मंगल लोककल्याण का साधन बनता है। क्रोध को संयम में बदलें तो वही ऊर्जा व्यक्तित्व की शक्ति बन जाती है। भोजन और जीवनचर्या में सात्त्विकता लाएं तो मन को शांत रखने में सहायता मिलती है।

उज्जैन के मंगलनाथ की पावन कथा का यही प्रेरणादायक संदेश है-मंगल को डरने का विषय नहीं, समझने और साधने की शक्ति मानिए। भगवान शिव ने अंगारक को नष्ट नहीं किया; उन्होंने उसकी उग्रता को उद्देश्य दिया। शायद यही सनातन जीवन-दर्शन की सुंदरता है-मनुष्य के भीतर की शक्ति को दबाना नहीं, उसे संस्कार देना। जब साहस में विवेक, पराक्रम में प्रेम, भाईचारे में अपनापन, मित्रता में विश्वास, भोजन में सात्त्विकता और क्रोध में संयम आ जाता है, तब जीवन में मंगल ही मंगल होता है। और यही मंगलनाथ की कथा को आज की पीढ़ी के लिए भी उतना ही प्रासंगिक बनाता है-'क्रोध को मत पालिए, उसे पराक्रम बनाइए; शक्ति को मत बिगाड़िए, उसे सेवा बनाइए; और संबंधों में प्रतिस्पर्धा नहीं, प्रेम रखिए—यही सच्चा मंगल है। क्रोध से कांप उठी थी धरती, समुद्र में मचा था तूफान; भगवान शिव ने अंगारक को दिया उज्जैन का धाम, आज अंगारेश्वर महादेव सिखाते हैं-क्रोध को पराक्रम और शक्ति को कल्याण में कैसे बदलें'

हर-हर महादेव, 84 महादेव यात्रा जारी...